කැලණිය විශ්වවිද්‍යාලය - ශ්‍රී ලංකාව
UNIVERSITY OF KELANIYA – SRI LANKA

දුරස්ථ සහ අඛණ්ඩ අධ්‍යාපන කේන්ද්‍රය

ශාස්ත්‍රවේදී (සාමාන්‍ය) උපාධි ප්‍රථම වර්ෂ පරීක්ෂණය (බාහිර) - 2016 ජනවාරි
2012/2013 අධ්‍යයන වර්ෂය

මානවශාස්ත්‍ර පීඨය

හින්දී HIND E 1025

අර්ථාවබෝධය හා ප්‍රකාශන ශක්‍යතාව

ප්‍රශ්න සංඛ්‍යාව: 05 කාලය: පැය 03

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

01. निम्नलिखित शीर्षकों में से किसी **एक** पर लगभग **डेढ़ पृष्ठों** का निबंध हिंदी में लिखिए। (20 अंक)

(क) हमारे जीवन में जल की उपयोगिता

(ख) मेरी नटखट बहन

(ग) स्कूल की छुट्टी

02. (i) निम्नलिखित गद्यांश अथवा पद्यांश का **सिंहली में** अनुवाद कीजिए। (10 अंक)

(क) एक लड़का था। उसका नाम था मिंटू। वह बहुत शरारती और ज़िद्दी था। उसकी माँ हर रोज़ उसे समझाती, पर वह ध्यान नहीं देता था। उसे सूखे मेवे खाना बहुत अच्छा लगता था। जब भी माँ उसे सूखे मेवे देती, वह कहता "माँ, माँ, मुझे सूखे मेवे ज़्यादा चाहिए।" माँ समझाती, पर वह नहीं समझता और कहता, "नहीं, नहीं, मुझे और चाहिए।" तंग आकर माँ उसे थोड़ा–सा और देती।

ज़िद्दी – මුරණ්ඩු

मेवे – වියළි මිදි

अथवा

(ख) मंद–मंद मुस्काना सीखो।
गीत प्यार से गाना सीखो।

भाईचारा सबको प्यारा,
सबको गले लगाना सीखो।

नहीं किसी पर हाथ उठाना,
सबसे हाथ मिलाना सीखो।

माता–पिता, गुरु और प्रभु को,
निश–दिन शीश झुकाना सीखो

दीन, दुखी और वृद्ध जनों की,
सेवा कर मुस्काना सीखो।

निश–दिन – දවල් ය
वृद्ध – මහලු

(ii) निम्नलिखित वाक्यों का **हिंदी में** अनुवाद कीजिए। (10 अंक)

a. මමත් මගේ යෙහෙළියත් කැලණිය විශ්වවිද්‍යාලයේ අවසන් වසරේ ශිෂ්‍යාවෝ වෙමු.
b. ඇයගේ සහෝදරයාගේ බිරිඳ සහ මගේ ස්වාමියාගේ යහලුවකුගේ බිරිඳ යෙහෙළියෝ වෙති.
c. ඔහුගේ දියණියට හින්දී කතා කළ හැකිය.
d. මම අද සවසට ඔහුත් සමඟ ගෙදර යා යුතුය.
e. අපේ නිවස ඉදිරිපස නිවසෙහි ජීවත්වන මිනිස්සු සෑම දිනම උදැසන පන්සල් යති.

03. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए और पूछे गये प्रश्नों के उत्तर अपनी हिंदी में लिखिए। (20 अंक)

किसी स्थान पर एक बाँस का पेड़ था और उसके समीप ही एक जामुन का भी पेड़ था। जामुन का पेड़ बहुत मज़बूत था। उसकी शाखाएँ चारों ओर फैली हुई थीं। इसके विपरीत बाँस का पेड़ पतला–सा तथा लचीला था। जिस दिशा में हवा चलती थी, वह बाँस का पेड़ भी उस ओर झुक जाता था।

एक बार जामुन के पेड़ ने रूखे स्वर में बाँस के पेड़ से कहा, "तुम तो बड़े आज्ञाकारी हो। तुम हवा की दिशा तथा गति के अनुसार क्यों हिलते–डुलते हो? तुम भी मेरी तरह शान से सीधे खड़े हो जाओ। तुम हवा से कह दो कि उसके आज्ञानुसार नहीं चलोगे। कुछ साहस का परिचय दो। इस संसार में बलवानों का ही बोलबाला है।"

जामुन के पेड़ की बातें सुनकर बाँस के पेड़ ने चुप रहना ही ठीक समझा।
बाँस के पेड़ को चुप देखकर जामुन का पेड़ क्रोधित होकर बोला, "क्या तुमने मेरी बात नहीं सुनी? तुम मेरी बातों का जवाब क्यों नहीं देते?"
इसपर बाँस के पेड़ ने कहा, "मैं क्या कह सकता हूँ? तुम तो अधिक मज़बूत हो। मैं तो बहुत कमज़ोर हूँ, लेकिन मेरी एक बात ध्यानपूर्वक सुनो। अगर हवा तेज़ गति से चलने लगी तो यह नुकसानदायक सिद्ध हो सकती है। अगर हवा बहुत तेज़ गति से चलने लगे तो उसका सम्मान करना चाहिए। नहीं तो.....।"
बाँस का पेड़ अपनी बात पूरी भी नहीं कर सका, तभी जामुन का पेड़ अत्यंत क्रोधित होकर उसकी बात काटकर बोला, "किसी भी प्रकार की हवा मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकती।"
उस समय चल रही मंद–मंद हवा ने जामुन के पेड़ तथा बाँस के पेड़ के बीच चल रहे संवाद को सुन लिया। हवा जामुन के पेड़ से तेज़ वेग से टकराती हुई आगे निकल गयी। कुछ देर उपरांत, अपने में कुछ और शक्ति समेटते हुए हवा ने अपने–आपको और वेगशाली बना लिया। वह हवा एक तूफान में बदल गयी। बाँस का पेड़ उस तेज़ हवा के टकराने से लगभग पूरा ही झुक गया था। फिर वही तूफानी हवा जामुन के पेड़ से दुबारा जा टकरायी। हवा के टकराने से उस पेड़ को कोई असर नहीं हुआ। वह ज्यों–का–त्यों ही खड़ा रहा। उस तूफानी हवा ने फिर उस पेड़ की जड़ों पर प्रहार किया। उस पेड़ की शाखाओं ने तूफानी हवाओं ने पूरी शक्ति लगाकर उन शाखाओं को पीछे की ओर धकेल दिया। इस प्रकार जामुन का पेड़ अपना संतुलन खो बैठा। उसकी जड़ें कमज़ोर हो गयीं तथा अपना स्थान छोड़ दिया और उसके बाद वह पेड़ धाराशायी हो गया।
जामुन के पेड़ का अंत देखकर बाँस का पेड़ दुखी मन से सोचने लगा, "आखिरकर जामुन के पेड़ का अंत ही हो गया। काश! उसने मेरा कहा माना होता और हवा का आदर किया होता, परंतु यह तो घमंडी था। उसे शायद यह नहीं मालूम था कि घमंडी का सिर कैसे नीचा होता है।"

I. जामुन के पेड़ की विशेषताएँ बताइए।

II. बाँस का पेड़ हवा के चलने से क्यों झुक जाता था?

III. संसार में किनका बोलबाला है?

IV. तेज़ तूफान आने से जामुन के पेड़ की क्या दशा हुई?

V. इस कहानी से हमें कैसी शिक्षा मिलती है?

04. निम्नलिखित पद्यांशों में से **किसी एक** की भावार्थ लिखिए। (20 अंक)

(क) वह आता
दो टूक कलेजे के करता पछताता
पथ पर आता,
पेट–पीठ दोनों मिलकर हैं एक,
चल रहा लकुटिया टेक,
मुट्ठी भर दाने को भूख मिटाने को
दो टूक कलेजे के करता
पछताता पथ पर आता।

साथ दो बच्चे भी हैं सदा हाथ फैलाये,
बाएँ से मलते हुए पेट को चलते
और दाहिना दया–दृष्टि पाने की ओर बढ़ाये
भूख से सूख ओठ जब जाते
दाता भाग्य विधाता से क्या पाते?
घूँट आँसुओं को पीकर रह जाते!

(ख) शीघ्र ही आ जाओ जलद! स्वागत तुम्हारा हम करें,
ग्रीष्म के संतप्त मन के ताप को कुछ कम करें,
है धरित्रि के उरस्थल में जलन तेरे बिना,
शून्य–सा आकाश तेरे ही जलद! घेरे बिना।

पत्रहीना वल्लरी जैसी जटा बिखरी हुई,
उत्तरीय समान जिनपर धूप है बिखरी हुई,
शैल वे साधक सदा जीवन सुधा को चाहते,
धूलिधूसर है धरा मलिन तुम्हारे लिए।

है फटी दुर्वादलों की श्याम साड़ी देखिए,
जल रही छाती, तुम्हारा प्रेम–वारी मिला नहीं,
इसलिए उसका मनोगत–भाव–फूल खिला नहीं,
नेत्र–निर्झर सुख सलिल से भरें, दुख सारे भगे।

05. कपड़ों की दुकान में दुकानदार तथा खरीदनेवाले के बीच में होनेवाला वार्तालाप लिखिए। (20 अंक)

****